Introduction

प्राक्कथन :-

संगीत एक ऐसा शब्द है जो कि सभी के हृदय में बसता है, इसके बिना तो जीवन नीरस व निराधार ही है । संगीत जीवन के सूनेपन को सकेर - रस संचार कर आधार प्रदान करता है । ऐसा कौन है ? जिसके जीवन में संगीत का स्थान न हो । सौभाग्य से मुझे "संगीत" को अध्ययन का विषय बनाने का सुअवसर मिला । स्नातकोत्तर शिक्षा की अवधि में "संगीत" को अधिक से अधिक जानने समझने की जिज्ञासा बलवती हो उठी । शोध करने की महत्वाकांक्षा को मैं पोसती रही। संगीत जगत के महानुभावों से प्रेरणा मिली, आदरणीय गुरुजी ने समुचित मार्गदर्शन दिया और परिवार से सम्बल मिला । मैं राजस्थान में जन्मी व पली - बड़ी हुई "माण्ड" की स्वर लहरियों ने समय-समय पर हृदय को आड़ोलित किया - अतः उसके स्वरुप को समझने का मैनें मन बना लिया ।

माण्ड गायन शैली पर शोध करने का निश्चय करने पर एक बृहद पटल मिल गया। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करते व अनगिनित लोगों से मिलने के साथ-साथ कितने ही खट्टे - मीठे व अनूठे अनुभवों का भण्डार हो गया। शोध प्रारम्भ करने से पहले की अवस्था और आज की मनोदशा में सम्यक ज्ञान का गुणात्मक अन्तर है।

यों तो शोध प्रबन्ध पूरा हुआ है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि जानने समझने का कार्य तो मानो अब आरम्भ हो रहा है । संगीत के महासागर से माण्ड गायन शैली के अप्रतिम मोतियों को एकत्रित करके उनके अनुपम सौन्दर्य से सराबोर होते हुए ऐसी प्रतिती होती है मानो युग निकल जायेंगे और खजाना पूरा समेट नहीं पाऊँगी ।

प्रस्तावित शोध विषय को छः अध्यायों में विभक्तकर राजस्थान के लोकसंगीत व "माण्ड" के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का प्रस्तुत प्रबन्ध में प्रयास किया है । मरुभूमी की सांस्कृतिक धरोहर के सशक्त प्रहरी "माण्ड" के बेजोड़ सौन्दर्य व वर्तमान समय में उसके महत्व को प्रकाशमान करना ही मेरा लक्ष्य रहा है । आशा है संगीत के सशक्त माध्यम को सुसभ्य व सुसंस्कृत रुप प्रदान करने के लिए पारम्परिक माण्ड गायन शैली की ओर जन चेतना जागृत करने की दिशा में मेरा यह प्रयास महत्तम अंश तक सफल हो पायेगा ।

*****

राजस्थान ✍ इन्द्र धनुषीय रंगों में रंगी हुई राजस्थानी धरा। यहाँ के लोग रिवाज, संस्कार, सभ्यता, संस्कृती, परिधान व संगीत आदि अपनी अलग पहचान लिए हुए हैं।

चटक लाल, पीलें, हरे, नीले आदि विभिन्न रंगों में रंगें यहाँ के निवासियों के परिधान इनके हृदय में उठनेवाली उल्लासित और प्रसन्नचित्त लहरों को दर्शाते हैं, मानों ऐसा प्रतीत होता है की राजस्थानी धरा की खूश्बू में ही निरालापन है । यहाँ का गौरवशाली इतिहास सभी के हृदय को आश्चर्य चकित करता है, राजा-महाराजाओं की वीर गाथाएँ हो या फिर राजपूत वीरांगनाओं का जौहर हो । इस गरीमामयी इतिहास से हम भली भाँती परिचित हैं । ३० मार्च को हम राजस्थान दिवस मानते हैं व हमारे देश का १०.४१% का क्षेत्र राजस्थान में आता है तथा देश की ५% जनसंख्या राजस्थान में निवास करती है । राजस्थान का बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर व गंगानगर इन चार जिलों की सीमा अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से जुड़ी हुई है तथा जैसलमेर पाकिस्तान की सीमा से जुड़ा हुआ सबसे लम्बा क्षेत्र है ।

राजस्थान प्रदेश देश के अन्य कई प्रदेशों से जुड़ा हुआ है। उत्तर में पंजाब व हरियाणा, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्यप्रदेश व दक्षिण-पश्चिम में गुजरात स्थित है । जनसंख्या की दृष्टि से देश में राजस्थान नवें स्थान पर आता है। राजस्थान के सभी जिलों में से जैसलमेर राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है।

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान के विषय में जितना कहा जाए उतना कम है। यहाँ के किले, महल, हवेलियों में वास्तविक खूबसूरती झलकती है। हर स्थल अपने वजूद की कहानी को स्पष्ट करता है - चाहे वो पत्थर पर कारीगिरी का काम हो या लकड़ी का, दिवारों पर चित्रकारी हो या आभूषणों पर महीन काम, राजस्थान की कोई भी कला हो, सम्पूर्णता व अनोखापन लिए हुए है । यूँ तो राजस्थान में माण्ड सभी जगह गाई जाती है, किन्तु राजस्थान के कुछ प्रमुख क्षेत्रों में माण्ड का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है - जयपुर, उदयपुर, बाड़मेर, बीकानेर व जोधपुर आदि क्षेत्रों में माण्ड मुख्य रुप में सुनने मिलती है।

आइये राजस्थान के इन प्रमुख क्षेत्रों को संक्षिप्त में जानें।

राजस्थान :

जनसंख्या : ५६, ४७३, १२२

क्षेत्रफल : ३४२, २३९ sq. M.

साक्षरता : ६१.०३%

भाषा : हिन्दी, राजस्थानी

जैसलमेर :

जनसंख्या : ५०७, ९९९

क्षेत्रफल : ३८, ४०१ sq. M.

साक्षरता : ५१.४%

दर्शनीय स्थल : जैन मन्दिर, हवेलियाँ, मरूस्थल, श्री अष्टपदी मन्दिर, गढ़िसर तालाब ।

बाड़मेर :

जनसंख्या : १, ९३, ७५८

क्षेत्रफल : २८, ३८७ sq. M.

साक्षरता : २२.९८%

दर्शनीय स्थल : किला, जैन मन्दिर, मरूस्थलीय भू भाग ।

जयपुर :

जनसंख्या : ५, २५२, ३८८

क्षेत्रफल : १४, ०६८ sq. M.

साक्षरता : ७०.६३%

दर्शनीय स्थल : हवामहल, सिटी पैलेस, जलमहल, जन्तरमन्तर, जयगढ़ किला, जगतशिरोमणी मन्दिर, गोविन्द देवजी का मन्दिर, गलता, शिशोदिया बाग, आमेर किला, नाहरगढ़ किला ।

उदयपुर :

जनसंख्या : २, ६३२, २१०

क्षेत्रफल : १७, २७९ sq. M.

साक्षरता : ५९.२६%

दर्शनीय स्थल : लैक पैलेस, जयमहल, जगमन्दिर, जगदीश मन्दिर, फतहसागर, भारतीय लोक कला मण्डल, सहेलियों की बाड़ी, प्रताप मेमोरीयल, पिछोला झील, गुलाब बाग, सज्जनगढ़ ।

जोधपुर :

जनसंख्या : २, ८८०, ७७७

क्षेत्रफल : २२, ८५० sq. M.

साक्षरता : ५७.३८%

दर्शनीय स्थल : उम्मेदभवन पैलेस, जसवंत थड़ा, मेहरानगढ़ किला, संग्रहालय ।

बीकानरे :

जनसंख्या : १, ६७३, ५६२

क्षेत्रफल : २७, २४४ sq. M.

साक्षरता : ५७.५४%

दर्शनीय स्थल : करणीमाता का मन्दिर ।

*****